Toppersnotes
Unleash the topper in you

उत्तराखण्ड वनआरक्षी

समूह 'ग'

उत्तराखण्ड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग

भाग – 3

भारत का सामान्य ज्ञान एवं तार्किक योग्यता

SIERRA INNOVATIONS

उत्तराखण्ड वनआरक्षी समूह 'ग'

विषय सूची

भारतीय इतिहास

I. प्राचीन इतिहास

1.	प्रागैतिहासिक काल	1
2.	सिन्धु घाटी सभ्यता	2
3.	वैदिक सभ्यता	5
4.	बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म	9
5.	महाजनपद काल	11
6.	मौर्य काल	13
7.	मौर्योत्तर काल	15
8.	गुप्त काल	16
9.	गुप्तोत्तर काल	18

II. मध्यकालीन भारत

1.	भारत पर मुस्लिम आक्रमण	21
2.	सल्तनत काल	21
3.	मुगल काल	26
4.	भक्ति एवं सूफी आन्दोलन	31
5.	मराठा उदभव	33

III. आधुनिक भारत का इतिहास

1.	भारत में यूरोपीयन कम्पनियों का आगमन	35
2.	बंगाल और अंग्रेज	37
3.	मराठा शक्ति का उत्कर्ष	37
4.	अंग्रेजों की भू-राजस्व नीतियाँ	39
5.	आंग्ल-मैसूर संघर्ष	40

6. आंग्ल-सिक्ख संघर्ष 41
7. गवर्नर जनरल 42
8. भारत के वायसराय 44
9. 1857 की क्रांति 46
10. धर्म एवं समाज सुधार आन्दोलन 47
11. राष्ट्रीय आन्दोलन 49
12. गाँधी युग 53
13. भारत में क्रान्तिकारी संगठन 60

भारतीय संविधान

1. संविधान का विकास 62
2. संविधान की पृष्ठभूमि 63
3. संविधान के भाग 65
4. अनुसूचियां 77
5. प्रस्तावना 78
6. संघ 79
7. संसदीय समितियाँ 88
8. न्यायपालिका 89
9. राज्य 91

भारतीय भूगोल

1. भारत की स्थिति एवं विस्तार 106
2. भारत के भौगोलिक भू-भाग 108
3. भारत का अपवाह तंत्र 114
4. जैव-विविधता एवं संरक्षण 119
5. भारत की मृदा 126
6. जलवायु 127
7. भारत में खनिज 128
8. भारत के प्रमुख उद्योग 131

9. भारत में परिवहन 134
10. भारत में कृषि 138
11. भारत की जनजातियाँ 141

Reasoning

Verbal

1. श्रृंखला 143
2. अंग्रेजी वर्णमाला परीक्षण 153
3. कूट – भाषा परीक्षण 161
4. क्रम व्यवस्था 172
5. रक्त संबंध 176
6. दिशा और दूरी परीक्षण 185
7. पहेली 192
8. वेन आरेख 197
9. आकृतियों की गणना 206
10. घन और घनाभ 216
11. पासा 219
12. लुप्त पदों का भरना 224
13. सादृश्यता 233
14. वर्गीकरण 243
15. तार्किक विचार 248

Non Verbal

1. श्रृंखला 254
2. सादृश्यता 260
3. वर्गीकरण 263

प्राचीन इतिहास

- इतिहास शब्द ग्रीक अथवा यूनानी भाषा के शब्द हिस्टोरिया से बना है जिसका अर्थ होता है खोज अथवा छानबीन ।
- इतिहास का संबंध अतीत की उन घटनाओं से है जिनका हमारे पास लिखित एवं प्रमाणित तिथि उपलब्ध है ।
- ग्रीका विद्वान हैरोडोट्स ने इतिहास की प्रथम पुस्तक "हिस्टोरिका" लिखी ।
- हैरोडोट्स को इतिहास का पिता कहा जाता है ।
- इतिहास को जानने के लिए निम्न स्त्रोत है ।
  1. पुरातात्विक स्त्रोत
  2. साहित्य स्त्रोत
  3. विदेशी यात्रियों का यात्रा वृतांत

अध्ययन की दृष्टि से भारतीय इतिहास को हम निम्न प्रकार बांट सकते है ।

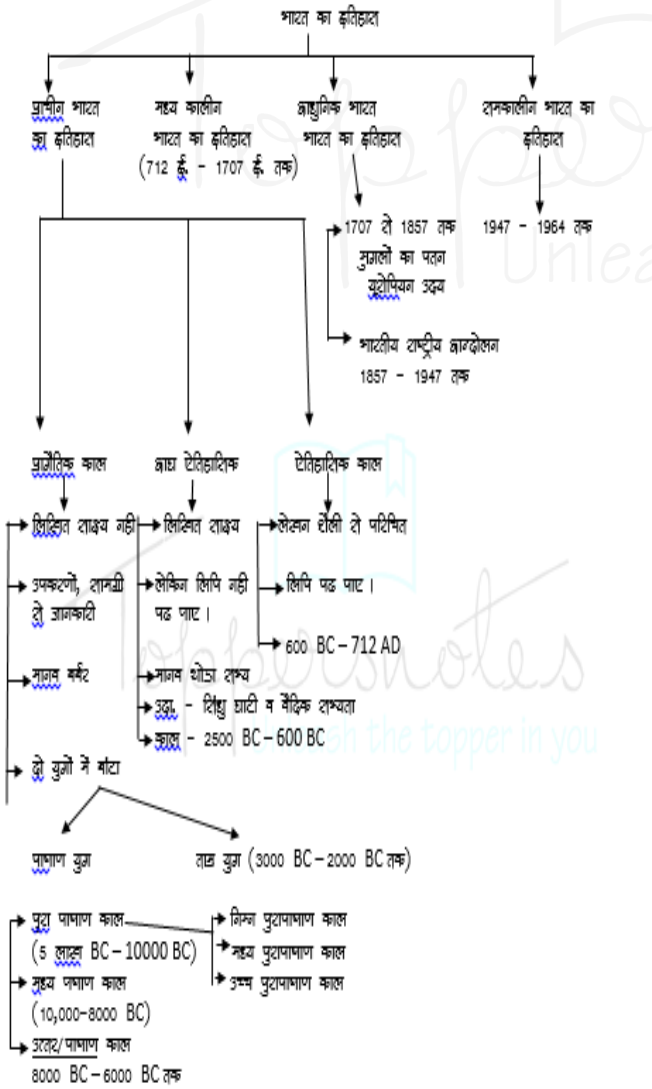

पुरापाषाण काल –

- आधुनिक मानव होमो सैपिनियंस का उदय ।
- मानव आग जलाना ।
- इस काल में चापर – चौपिंग संस्कृति का उदय, डी एन वाडिया ने खोज की , यह उत्तर भारतीय संस्कृति है ।
- दक्षिण भारत की संस्कृति हैण्ड – एक्स संस्कृति है इसकी खोज रॉबर्ट ब्रुस फुट ने की ।
- चापर–चौपिंग एवं हैण्ड डैस संस्कृति (उत्तर एवं दक्षिण) मिलन स्थल चौंतरान (जम्मू कश्मीर) है ।

प्रमुख स्थल –

भीम बेटका – शैला शील चित्रों के प्रसिद्ध;
डीडवाना (राजस्थान); हथनौरा

मध्य पाषाण काल

- इस काल को माइक्रोलिथ काल कहते है । छोटे – छोटे पाषाण उपकरणों के कारण ।
- भारत में इस काल का जनक HCL क्लाईल ।
- मानव न इस काल में सर्वप्रर्थम पशु पालन करना सीखा ।
- पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य है । बागौर (राजस्थान) एवं आदमगढ (MP)
- मध्य पाषाण काल का सबसे प्राचीन स्थल सराय नाहर यूपी है ।

उत्तर/नव पाषाण काल

- सर जॉन लुबाक ने नव पाषाण काल शब्द दिया ।
- गार्डन चाइल्ड ने इस काल को "नव पाषाणिक क्रांति" कहा ।
- ली मेंसियर ने उत्तर भारत में नव पाषाणिक उपकरण खोजे ।
- नेविलियन फ्रेंजर ने दक्षिण भारत से नव पाषाणिक उपकरण खोजे ।
- मानव ने कृषि करना सीखा ।
- वृहद पैमाने पर पशुपालन एवं ग्रामीण संस्कृति के साक्ष्य मिले ।

प्रमुख स्थल –

1. मेहरगढ (पाक) – नव पाषाण काल का सबसे प्राचीन स्थल
   8000 BC पूर्व कृषि के साथ साक्ष्य मिले ।
2. कोल्डी हवा – (यूपी) – 6000 वर्ष पूर्व चावल की खेती के साक्ष्य मिले ।
3. बृजहोम एवं गुफ्फकराल (J&K) बृजहोम से मानव के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य भी मिले है ।

नोट –
प्रागऐतिहासिक काल के जनक भारत में डा. प्राइम रोज थे । जिन्होंने लिंगसुमुर (कर्नाटक) से पाषाण कालीन उपकरण खोजे थे । नव पाषाण काल में दक्षिण भारत की प्रमुख फसल रागी थी ।

सिन्धु घाटी सभ्यता

परिचय

हडप्पा सभ्यता

- चार्ल्स मेसन – 1826 ई. सबसे पहले सभ्यता की ओर ध्यान आकर्षित किया ।
- जॉन ब्रंटन व विलियम ब्रंटन – 1856 ई हडप्पा नगर का सर्वे किया ।
- कनिंघम इस ओर ध्यान दिलाया कनिंघम को भारतीय पुरातात्विक विभाग का पितामह कहा जाता है ।
- 1921 में सर जॉन मार्शल के निर्देशन में दयाराम साहनी ने इसका उत्खनन किया ।
- सर्वप्रथम इस स्थल की खोज होने के कारण यह स्थल हडप्पा सभ्यता कहलाया ।

अन्य नाम

सिंधु घाटी सभ्यता
सरस्वती नदी घाटी सभ्यता
कांस्य युगीन सभ्यता
नगरीय सभ्यता

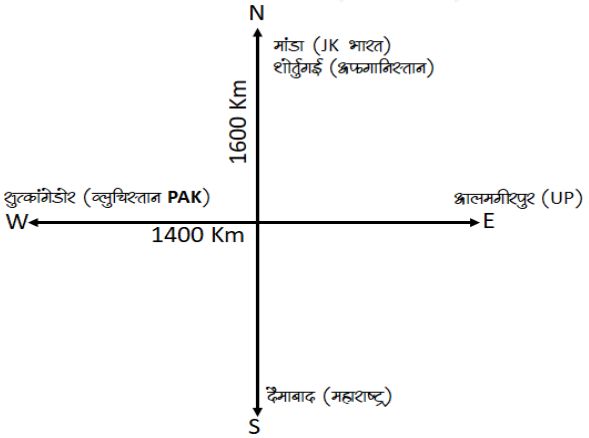

1300 किमी समुद्री सीमा

नोट –

- अफगानिस्तान में सिंधु घाटी सभ्यता के मात्र दो स्थल थे । शार्तगोई एवं मुंडीगॉक हैं ।
- शार्तगोई से नहरों द्वारा सिंचाई के साक्ष्य मिले है
- सिंधु घाटी सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया के सभ्यता से 12 गुना बडी थी । जबकि मिश्र की सभ्यता से 20 गुना बडी थी ।
- आजादी से पूर्व खोजे समस्त स्थल पाकिस्तान में चले गये । भारत में केवल दो स्थल रहे, रंगपुर (गुजरात) और कोटला निहंगखां (रोपड पंजाब)
- भारत का सबसे बडा स्थल राखी गढ (हरियाणा) है, दूसरा बडा स्थल धौला वीरा (गुजरात) है ।
- पिग्गट ने हडप्पा एवं मोहनजोदडो को सिन्धु सभ्यता की जुडवा राजधानी बताया है ।
- बडे नगर (पाकिस्तान)
  गनेडीवाल
  हडप्पा
  मोहनजोदडों

कालक्रम –

जॉन मार्शल – 3250 BC – 2750BC
माधोस्वरूप वत्स – 3500 BC – 2700 BC
रेडियो कार्बन पद्धति – 2300 BC – 1750 BC
एनसीआरटी – 2500 BC – 1750 BC
फेयर सर्विस – 2000 BC – 1500 BC
अर्नेस्ट मैके – 2800 BC – 2500 BC

निवासी –

यहां से प्राप्त कंकालों के आधार पर चार प्रजातियों में बांटा जा सकता है ।

1. भूमध्य सागरीय
2. अल्पाईन
3. मंगोलायड
4. प्रोटो आस्ट्रालायड

सर्वाधिक प्रजाति भूमध्य सागरीय प्रजाति मिली है ।

नगर नियोजन –

- नगर दो भागों में विभाजित – पश्चिमी भाग एवं पूर्वी भाग । पश्चिमी भाग दुर्ग था, पूर्वी भाग सामान्य नगर था ।
- पश्चिमी भाग में प्रशासनिक लोग रहते थे । तथापूर्वी भाग में जनसामान्य लोग रहते थे ।
- सिंधु घाटी सभ्यता में पक्की ईंटों के मकान है ।
- सिन्धु घाटी के समकालीन सभ्यताओ मे इस विशेषता का अभाव ।
- नगर परकोटे युक्त होते थे ।
- घरों के दरवाजे मुख्य सडक की तरफ न खुलकर पीछे की तरफ खुलते थे । केवल लोथल में मुख्य सडक की तरफ घरों के दरवाजे खुलते थे ।
- कालीबंगा दोहरे परकोटे युक्त है । जबकि चन्हुदडो में कोई परकोटा नही ।
- धोलाबीरा तीन भागों में विभक्त है । पश्चिमी, पूर्वी एवं मध्यमा ।
- लोथल एवं सुरकोटडा का पश्चिमी एवं पूर्वी भाग दोनो ही एक ही परकोटे से घिरे हुए है ।
- नगर ग्रिड पद्धति पर आधारित थे अर्थात शतरंज के बोर्ड की तरह सभी नगरों को बसाया था । सभी मार्ग समकोण पर काटते थे ।
- सबसे चौडी सडक 10 मीटर (मोहनजोदडो) की मिलती है जो सम्भवतः राजमार्ग रहा होगा ।
- घरो मे उत्कृष्ट नाली व्यवस्था (जल निकासी हेतु)
- बडी नालियो को ढक कर रखते थे ।
- भवन के अन्दर सामान्यतः 3 या 4 कक्ष, रसोईघर, 1 विद्यालय स्नानागार एवं कुआं होता था ।
  कच्ची एवं पक्की ईंटो का प्रयोग करते थे ।
  ईंट का आकार – 1 : 2 : 4
  जल निकासी हेतु पक्की ईंटों की नालियां होती थी विश्व की किसी अन्य सभ्यता में पक्की नालियों के साक्ष्य नही मिलते थे ।

प्रमुख नगर

1. हडप्पा: –

पाकिस्तान के पंजाब के मोंटगोमरी जिले मे स्थित (अब – शाहीवाल जिले मे) रावी नदी के तट पर

- उत्खननकर्ता – दयाराम साहनी
- रावी नदी के तट पर श्रमिको के आवास एवं अन्नागार मिलते है ।
- R – 37 नामक कब्रिस्तान मिलता है । एक शव को ताबूत मे दफनाया गया है, इसे विदेशी की कब्र कहते है ।
- टीले पर निर्मित – व्हीलर ने "माउण्ट A – B" कहा
- शंख का बना बैल 18 वर्ताकार चबूतरे मिले है ।
- यहां से सर्वाधिक अभिलेख युक्त मुहरें मिली है ।
- 6 – 6 की पंक्ति में कुल 12 कमरों वाला आवास स्थल मिला है ।
- एक स्त्री के गर्भ से निकलता हुआ पौधा की मृणमूर्ति मिली है । सम्भवतः उर्वरता की देवी होगी ।

2. मोहनजोदडो : –

स्थिति = लरकाना (सिन्ध, PAK)
सिन्धु नदी के तट पर
उत्खननकर्ता = राखालदास बनर्जी
मोहनजोदडो का शाब्दिक अर्थ = मृतकों का टीला (सिन्धी भाषा)

(i) विशाल स्नानागार –
  (a) 11.88 × 7.01 × 2.43 मीटर
  (b) सम्भवतया यहाँ धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता रहा होगा ?
  (c) सर जॉन मार्शल ने इसे तात्कालिक समय की आश्चर्यजनक इमारत कहा है ।

(ii) विशाल अन्नागार सिंधु सभ्यता की सबसे बडी इमारत है । ल. 45.71×15.23 मीटर चौडी है ।

(iii) महाविद्यालय के साक्ष्य

(iv) सूती कपडे के साक्ष्य

(V) हाथी का कपालखण्ड

(vi) कांसा की नर्तकी की मूर्ति मिली है ।

(vii) पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान की अवस्था में है
  (a) इसने शॉल ओढ रखी है जिस पर कशीदाकारी का कार्य किया गया है ।

(viii) यहाँ से मेसोपोटामिया की मुहर मिलती है ।

(ix) योगी की मूर्ति मिली है ।

(x) आद्य शिव की मूर्ति मिली है ।

(xi) बांध से पतन के साक्ष्य मिलते है ।

(xii) सर्वाधिक मुहरें सिंधु घाटी सभ्यता के यहां मिलती है ।

3. लोथल :-

स्थिति = गुजरात

- भोगवा नदी के किनारे
  उत्खननकर्ता = S. R. राव (रंगनाथ राव)
  → यह एक व्यापारिक नगर था ।

(i) यहाँ से गोदीवाडा (Dockyard) मिलता है
  (a) यह सिन्धु घाटी सभ्यता की सबसे बडी कृति है ।
(ii) मनके (Bead) बनाने का कारखाना
(iii) चावल के साक्ष्य
(iv) फारस की मुहर जो गोलाकार बटननुमा है
(v) घोडे की मृण्मूर्तियाँ
(vi) चक्की के दो पाट
(vii) घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर खुलते है (एकमात्र)
(viii) छोटे दिशा सूचक यंत्र

4. सुरकोटडा / सुरकोटदाः -

स्थिति = गुजरात

(i) घोडे की हड्डियाँ

- सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगो को घोडे का ज्ञान नहीं था ।

5. रोजदी (गुजरात)

- हाथी के साक्ष्य

6. रोपड (PB)

मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य

7. धौलावीरा

गुजरात – कच्छ जिला (किसी नदी तट पर नहीं)
उत्खननकर्त्ता – रविन्द्र सिंह विष्ट (1990 में)

- यह सबसे नवीन नगर है जिसका उत्खनन किया गया
- कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य । संभवतः नहरों के माध्यम से खेती करते होंगे । (दुर्गभाग, मध्यम नगर, निचला)
- यह नगर 3 भागों में बंटा हुआ था ।
- स्टेडियम एवं सूचना पट्ट के अवशेष मिलते है (खेल का मैदान)

8. चन्हुदडों

उत्खननकर्त्ता – एन. मजूमदार (डाकूओं ने हत्या कर दी) – अर्नेस्ट मैके

- मनके बनाने के कारखाने (मणिकारी), मुहर बनाने का काम आदि ।
- औद्योगिक नगर
- झाकर एवं झुकर संस्कृति के साक्ष्य मिलते है ।
- कुत्ते द्वारा बिल्ली का पीछा करने के पद चिन्ह है ।
- एक सौन्दर्य पेटिका मिली है । जिसमें एक लिपिस्टिक है ।

कालीबंगाः-
अवस्थिति- हनुमानगढ
नदी-घग्घर/सरस्वती/दृषद्वती/चौतांग
उत्खननकर्ता- अमलानन्द घोष
(1952)अन्य सहयोगी- बी. बी. लाल
बी. के. थापर
जे. पी. जोशी एम. डी. खरे
शाब्दिक अर्थ- काली चुडिया
(पंजाबी भाषा का शब्द)
उपनाम- दीन हीन बस्ती- कच्ची ईटों के मकान ।

सामग्रीः-

- सात अग्नि वेदिकाएँ एवं हवन कुण्ड मिले है,
- युग्मित शवाधान प्राप्त हुए ।
- एक मानव कपाल खण्ड मिला है, जिसे मस्तिष्क शोधन बीमारी तथा शल्य चिकित्सा की जानकारी मिलती है ।
- जूते हुए खेत के साक्ष्य मिलते है (एकमात्र स्थान) एक साथ दो फसले, उगाया करते थे, जौ एवं सरसों
- मकान कच्ची ईटों के थे बल्लियो की छत होती थी
- जल निकाली हेतु लकडी की नालियों के साक्ष्य मिले है अर्थात सुदृढ जल निकासी व्यवस्था नही थी ।
- ईटों को धूप से पकाया जाता था ।
- वृताकार चबूतरे एवं बेलनाकार मुहरे (मैसोपोटामिया) मिली है ।
- लाल रंग के मिट्टी के बर्तन मिले है जिन पर काली एवं सफेद रंग की रेखाएँ खीची गई है ।
- यहां से एक खिलौना गाडी एवं पंख फैलाए बगुले की मूर्ति मिली है।
- यहां से ऊँट के अस्थि अवशेष मिले है।
- यहां का नगर अन्य हडप्पा स्थलों की तरह ही है, लेकिन यहां गढी एवं नगर दोनों दोहरे परकोटे युक्त है।
- यहां उत्खनन में पांच स्तर प्राप्त हुए है प्रथम दो स्तर प्राक हडप्पा कालीन है । अन्य तीन स्तर समकालीन हडप्पा है ।

यहां प्राचीनतम भूकम्प के साक्ष्य प्राप्त होते है ।
इतिहासकार दशरथ शर्मा के अनुसार यह हडप्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी है ।
यहां एक कब्रिस्तान मिला है जिसे यहां के लोगों की शवाधान पद्धति की जानकारी भी मिलती है।
हडप्पा लिपि

- लगभग 64 मूल चिह्न व 400 तक अक्षर
- इन्हें लिपि का ज्ञान था
- दायीं से बायीं ओर लिखते थे ।
- गोमूत्राक्षर लिपि एवं भाव-चित्रात्मक लिपि थी ।
- 375 से 400 तक भाव एवं शब्दों का प्रयोग करते थे ।

पतन के कारण

- गार्डन चाइल्ड तथा व्हीलर के अनुसार आर्यो का आक्रमण
- रंगनाथ राव तथा सर जॉन मार्शल - बाढ
- लोम्बरिक-सिंधु नदी का मार्ग बदलता
- आरस्टाईन एवं अमलानंद घोष-जलवायु परिवर्तन

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य -

- कपास का उत्पादन सर्वप्रर्थम सिंधुवासियों ने किया ।
- सारगोन अभिलेख में सिंधु वासियों को मेलुहा (नाविको का देश) कहा गया है ।
- सिंधु वासियों का प्रिय पशु कुबड वाला बैल था ।
- दूसरा मुख्य पशु एक सींग वाला गेंडा था ।
- मातृ सत्तात्मक वाला समाज था ।

- सर्वाधिक मूर्तियां मातृ देवी की मिली है ।
- लिंग एवं योनि की पूजा करते थे ।
- योग से परिचित थे ।
  प्राकृतिक बहुदेव वाद में विश्वास करते थे ।
- मृत्यु के बाद भी जीवन में विश्वास करते थे ।
- सिंधुवासी घोडा, गाय, शेर और ऊंट से परिचित नही थे ।
- सिंधु वासी लोहे से परिचित नही थे

वैदिक काल(साहित्य)

1500 - 600 BC

इस काल को हम दो भागों में बांट सकते है ।

1. ऋग्वैदिक काल (1500 BC – 1000 BC)
2. उत्तरवैदिक काल (1000 BC – 600 BC)

परिचय -

वैदिक सभ्यता आर्यो द्वारा बसाई गई सभ्यता है ।
इस काल का इतिहास इस काल में लिखे गए साहित्य पर आधारित है । इस साहित्य को वैदिक साहत्य / श्रव्य साहित्य भी कहा जाता है । जो निम्न है ।

1. वेद ⇒ श्रुति
2. ब्राह्मण ⇒
3. आरण्यक ⇒
4. उपनिषद ⇒ वेदान्त

→ वैदिक साहित्य

(1) वेदांग
(2) धर्मशास्त्र
(3) महाकाव्य
(4) पुराण
(5) स्मृतियाँ

→ वैदिक साहित्य का अंग नहीं है ।

वेद -

- वेदों का संकलन कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने किया ।
- वेदों का नित्य, प्रामाणिक एवं अपौरूषेय माना जाता है
- वैदिक मन्त्रों की रचना करने वाले ब्राह्मणों को दृष्टा कहते है ।
- वेद 4 है -

1. ऋग्वेद -

- ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त, 10580(10600) मन्त्र है ।
- पहला एवं 10वाँ मण्डल बाद में जोडे गए है ।
- दूसरे से लेकर सातवें मण्डल को वंश मण्डल /परिवार मण्डल कहा जाता है ।
- तीसरे मण्डल मे गायत्री मन्त्र का उल्लेख मिलता है ।
  - गायत्री मंत्र की रचना विश्वामित्र ने की ।

- गायत्री मंत्र सविता / सावित्र (सूर्य) को समर्पित है
- सातवें मण्डल मे दशराज्ञ/ दशराजन युद्ध का उल्लेख मिलता है ।
  भरत कबीला V/S 10 कबीले
  राजा = सुदास
  पुरोहित = वशिष्ठ पुरोहित = विश्वामित्र
- यह युद्ध रावी नदी के जल के लिए लडा गया था
- आठवें मण्डल में घोसा, सिकता, अपाला, विश्वरा, काक्षावृति, लोपामुद्रा जैसी ऋषि महिलाओं के नाम मिलते है ।
- 9वां मण्डल सोम को समर्पित है ।
- सोम का निवास स्थान मुजवन्त पर्वत है ।
- 10वें मण्डल के पुरूष सूक्त में शूद्र शब्द का उल्लेख / चारों वर्ण का उल्लेख मिलता है ।
- 10वें मण्डल के नासदीय सूक्त में निर्गुण भक्ति का उल्लेख मिलता है ।
- ऋग्वेद के मन्त्रों को उच्चारण करने वाला ब्राह्मण = होतृ
- उपवेद = आयुर्वेद

2. <u>यजुर्वेद :–</u>

- यह 2 भागों में है – (i) शुक्ल यजुर्वेद
  (ii) कृष्ण यजुर्वेद
- यह गद्य एवं पद्य दोनों में है ।
- इसमें शून्य का उल्लेख मिलता है ।
- मंत्र पढने वाले को "अध्वर्यु" कहा जाता है ।
- यज्ञ – अनुष्ठानों की जानकारी मिलती है ।
- उपवेद – धनुर्वेद

3. <u>सामवेद</u> : –

- संगीत का प्राचीनतम स्त्रोत
- वैदिक मन्त्रों के उच्चारण को बताया गया है जो उच्च स्वर में गाए जाते है ।
- भगवान कृष्ण का प्रिय वेद
- मन्त्रों का उच्चारण करने वाला = उद्गाता
- उपवेद = गन्धर्ववेद

4. <u>अथर्ववेद :–</u>

- अथर्व ऋषि तथा आंगीरस ऋषि – रचयिता
- अन्य नाम – अथर्वआंगीरस वेद
- इसमें काले जादू, टोने – टोटको व चिकित्सा का उल्लेख । औषधि प्रयोग, शत्रुओं का दमन, रोग निवारण, तंत्र – मंत्र आदि ।
- मंत्रो का उच्चारण करने वाला – ब्रह्म
- उपवेद – शिल्पवेद ।

<u>वेद एवं उनसे संबंधित उनके ब्राह्मणक, आरण्यक एवं उनषिद ग्रंथ</u>

वेद	भाग	विषय	पुरोहित	ब्रह्मण्क	आरण्यक	उपनिषद
ऋग्वेद	साकल बालखिल्य वास्कल	छन्द/प्रार्थनाएं	होता/होतृ	ऐतरेय	ऐतरेय कौशीतकी	एतरेय कौशल्की
यजुर्वेद	कृष्ण यजुर्वेद शुक्ल यजुर्वेद	उच्च स्वर में उचारित किये जाने वाले मंत्र	अध्वर्यु	शतपथ तैतरेय मां,ायन	तैतरेय मंत्रायन वृहदारण्यक	कठ, तैतरेय वृहदायण्यक नाराण्यणश्वर श्वेतस्वर, ईश
सामवेद	कौथूम, राणण्यम और जैनिय	संगीत, गायन	उदगाता	पंचविष, षडविच जैमीनी	जैमीनी छन्दोग्य	केन जैमीनी छन्दोग्य
अथर्ववेद	शौनक,पीलाद	भौतिकवादी जादू, टोना लौकिक विधि विधान	ब्रहमा	गोपथ	–	प्रश्न, मुण्डक, मांडुक्य

- मुण्डकोपनिषद से सत्यमेव जयते लिया गया है ।
- प्रथम तीन वेदों को वेदत्रय कहा जाता है ।
- सबसे प्राचीन उपनिषद छान्दोग्य उपनिषद है ।
- उपनिषद को वेदांत कहते है ।

वेदांग –

वेदों के सरलीकरण हेतु इनका निर्माण किया गया । यह वैदिक साहित्य का हिस्सा नही है । इसके छह भाग है

1. शिक्षा – इसे वेदों की नासिका कहा जाता है ।
2. ज्योतिष – इसे वेदों की आंख कहा जाता है ।
3. व्याकरण – इसे वेदों का मुख कहा जाता है ।
4. छन्द – इसे वेदों का पैर कहा जाता है ।
5. निरूक्त – इसे वेदों का कान कहा जाता है ।
6. कल्प – इसे वेदों की हाथ कहा जाता है ।

कल्प के अंतर्गत शुल्व सूत्र ज्यामिति की सबसे प्राचीनग्रन्थ है।

पुराण – संख्या – 18

ऋषि लोमहर्ष एवं इनके पुत्र उग्रश्रवा ने संकलित किया

- मत्स्य पुराण – सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक इसमें सातवाहन शासकों का उल्लेख, शुंगवंश का उल्लेख
- विष्णु पुराण – मौर्य वंश का उल्लेख
- वायु पुराण – गुप्त वंश का उल्लेख
- मार्कण्डेय पुराण – देवी महात्मय – (इसका भाग दुर्गासप्तशती) महामृत्युंजय मंत्र
- मत्स्य पुराण – सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक इसमें सातवाहन शासकों का उल्लेख, शुंगवंश का उल्लेख

स्मृति साहित्यः –

- सबसे प्राचीन उपनिषद छान्दोग्य उपनिषद है ।
- इसमें सामाजिक नियमों का उल्लेख किया गया है

आर्यो का निवासः–

- आर्यो के निवास के बारे में विभिन्न मत प्रचलित है
- बाल गंगाधर तिलक के अनुसार आर्यो का मूल निवास उत्तरी ध्रुव है ।
- दयानंद सरस्वती के अनुसार तिब्बत मूल के आर्य है

डॉ. पैंनका ने जर्मनी को मूल स्थान बताया ।

मेक्स मूलर के अनुसार आर्य मध्य एशिया (बैक्टिरिया) है

आर्यो के उत्पति के संबंधित हाल ही में राखीगढ में उत्खनन से भी आर्यो की मूल उत्पति के संबंध मे पता नही लग पाया ।

सिंधु वासियों का राखीगढ से जो डीएनए मिला है । वह डीएनए उत्तर भारतीयों एवं दक्षिण भारतीयों में भी पाया गया है ।

ऋग्वैदिक काल के अन्य महत्वपूर्ण तथ्य –

- ऋग्वेद में सबसे ज्यादा सिन्धु नदी का उल्लेख मिलता है ।
- सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी । (देवीतमा, मातेतमा, नदीतमा)
- गंगा व सरयू का उल्लेख 1 – 1 बार
- यमुना का उल्लेख 3 बार
- "भुजवन्त" नामक पहाडी चोटी का उल्लेख – जो कि हिमालय है ।
- ऋग्वैदिक में वर्तमान की कई नदियों का उल्लेख मिलता है ।

सिंधु	सिंध
झेलम	वितस्तता
रावी	परूषणी
व्यास	विपासा
सतलज	शतुद्री
चीनाब	अष्किीनी
सरस्वती	सरस्वती
गोमल	गोमती
स्वात	स्वास्तु
कुर्रम	कुर्मु
काबुल	कुम्भा

नोट– गोमल, स्वात, कुर्रम, काबुल अफगानिस्तान की नदियां है ।

ऋग्वैदिक कालीन प्रशासन का मुखिया राजा होता था ।

राजा के सहयोग हेतु तीन संस्थाओं का उल्लेख मिलता है ।

यहां प्रशासन खंड स्तरीय होता है । जन सबसे बडी इकाई थी ।

ऋग्वेद में उल्लेख 275 बार । जिसका प्रमुख राजा होता था ।

विष का उल्लेख 70 बार ।

ग्राम का उल्लेख 13 बार ।

1. सभा – ऋग्वैदिक में आठ बार उल्लेख, कुलीन लोगों की संस्था थी ।
2. समिति – ऋग्ववेद में नौ बार उल्लेख जनसामान्य की संस्था थी ।
3. विदथ – यह सबसे प्राचीन संस्था है । 122 बार उल्लेख मिलता है । कार्यशैली की जानकारी नही मिलती ।

- आर्यो का प्रिय पशु घोडा था ।
- वर्ण व्यवस्था कर्म आधारित थी ।
- तीन वार्णो का उल्लेख मिलता है ।
- महिलाओं को राजनीतिक अधिकार प्राप्त थे । घोषा, शिक्ता, अपाला, विषपला (योद्धा), नामक महिला विदुषियों को जिक्र मिलता है ।

ऋग्वैदिक काल में निम्न प्रमुख देवता थे ।

1. इंद्र – ऋग्वैदिक में 250 बार उल्लेख । इसे पुरंदर कहा गया है ।
2. वरूण – ऋग्वैदिक में 30 बार उल्लेख । ऋत का देवता है ।
3. अग्नि – ऋग्वैदिक मे 200 बार उल्लेख ।

आर्यो की अर्थव्यवस्था पशुपालन आधारित थी ।
युद्ध गायों के लिए होते थे ।

उत्तरवैदिक काल – 1000 – 600 BC

- महत्वपूर्ण स्त्रोत – यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, उपनिषद् व आरण्यक
- आर्य संस्कृति के प्रसार और विकास, उत्कर्ष, विभिन्नीकरण का युग
- लौह प्रौद्योगिकी युग की शुरूआत । ("चित्रित धूसर मृदभाण्ड")

राजनैतिक जीवन – राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था :–

- राजा का पद वंशानुगत हो गया था ।
- ऐतरेय ब्राह्मण मे राजा की विभिन्न उपाधियों का वर्णन मिलता है ।
  स्वराट, विराट, एकराट, सम्राट
- राजा की सहायता हेतु 12 रत्निन् होते थे ।
- राजा यज्ञों का आयोजन करवाता था ।
  (i) अश्वमेध यज्ञ – यह साम्राज्यवादी यज्ञ होता था । 3 दिन तक होता
  (ii) राजसूय यज्ञ – राज्याभिषेक के समय किया जाता था इस दिन राजा हल चलाता था । अपने रत्निनों का निमंत्रण स्वीकार कर, उनके घर भोजन करने जाता था ।
  (iii) वाजपेयी यज्ञ – रथ दौड का आयोजन करवाते थे राजा हिस्सा लेता था व हमेशा जीतता था
- राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी ।
- ऋग्वैदिक काल मे राजा को दिया जाने वाला स्वैच्छिक कर, अब अनिवार्य हो गया, जिसे 'बली' कहा जाता था ।(1/16वाँ भाग)
- विद्थ का उल्लेख नहीं मिलता ।
- सभा, एवं समिति का प्रभाव कम हो गया था ।
- अथर्ववेद – सभा व समिति को प्रजापति की पुत्रियाँ कहा गया है ।
- राजा की "दैवीय उत्पति का सिद्धान्त" सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण मे मिलता है ।

आर्थिक जीवन :–

- कृषि का विकास हो चुका था ।
- अथर्ववेद मे "पृथवेन्यु" को कृषि धरती पर लाने का श्रेय जाता ह
  शतपथ ब्राह्मण में कृषि के सभी प्रकारों (जुताई,बुआई,कटाई) का उल्लेख मिलता है ।
- शतपथ ब्राह्मण की काठक संहिता मे (24 बैलों द्वारा खिंचे जाने वाले) हल का वर्णन मिलता है ।
- गेहूँ एवं जौ प्रमुख फसले थी ।
- पशुपालन भी होता था ।
- वस्तु विनिमय होता था ।
- विनिमय मे गाय व निस्क का प्रयोग होता था ।
  निस्क – सोने का आभूषण जो गले मे पहनते थे
- कृषि मे लौह निर्मित उपकरणों का प्रयोग (अन्तरजीखेडा से साक्ष्य)
- समुद्र का ज्ञान हो गया था ।

सामाजिक जीवन :–

- पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार
- चार वर्णों मे समाज विभक्त हो गया था । किन्तु अस्पृश्यता का अभाव था ।
- ब्राह्मणों को 'अदायी' कहा जाता था । आरम्भ के 3 वर्ग द्विज कहलाते थे ।
  (जनेऊ धारण करते है) उपनयन संस्कार होता था ।
  द्विज – दो बार जन्म लेने वाला
- क्षुद्रो को उपनयन संस्कार का अधिकार नहीं था ।
- महिलाओं की स्थिति मे गिरावट आयी । (वृहदारण्य उपनिषद मे याज्ञवल्क्य एवं गार्गी का संवाद मिलता है ।)
- अथर्ववेद मे पुत्री जन्म को दुःखदायी बताया है ।
- ऐतरेय ब्राह्मण में भी पुत्री जन्म को दुःखदायी बताया है । (पुत्री – कृपण कहा)
- मैत्रायणी संहिता मे भी पुत्री को शराब एवं जुआ की तरह बुराई बताया है ।
- महिलाओ को शिक्षा का अधिकार था । EX– गार्गी, मैत्रेयी, वेदवती
- सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा का प्रचलन नही था ।

धार्मिक स्थिति

- प्रमुख देवता – ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।
  पाँच प्रकार के यज्ञ होते थे (पंचयज्ञ)।
  (i) ब्रह्म यज्ञ
  (ii) देव यज्ञ
  (iii) अतिथि यज्ञ
  (iv) पितृ यज्ञ
  (v) भूत यज्ञ
- ब्रह्म यज्ञ को ''ऋषि यज्ञ'', अतिथि यज्ञ को ''मनुष्य यज्ञ'' भी कहते थे । (भूत यज्ञ – प्राणी जगत् व प्रकृति के प्रति कृतज्ञता)

3 ऋण –
(i) ऋषि ऋण
(ii) देव ऋण
(iii) पितृ ऋण

बौद्ध धर्म

संस्थापक – गौतम बुद्ध
जन्म – 563 B. C.
पिता – शुद्धोधन
माता – महामाया
मौसी – प्रजापति गौतमी
पत्नी – यशोधरा
पुत्र – राहुल
जन्मस्थान – लुम्बिनी (कपिलवस्तु)
आधुनिक – रूम्मिन देई, नेपाल
वंश – इक्ष्वाकु
शाक्य क्षत्रिय
गौत्र – गौतम

- 4 घटनाएँ जिन्होने बुद्ध का जीवन बदल दिया –
  (i) वृद्ध व्यक्ति
  (ii) बीमार व्यक्ति
  (iii) मृत व्यक्ति
  (iv) सन्यासी
- 29 वर्ष की अवस्था मे गृहत्याग किया यह घटना -- ''महाभिनिष्क्रमण'' कहलाती है।
- बुद्ध ने ''मध्यम मार्ग'' का प्रतिपादन किया ।
- बुद्ध उरूवेला चले गये एवं वहाँ निरंजना नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई ।
- अब सिद्धार्थ ''गौतम बुद्ध व शाक्य मुनि'' के नाम से प्रसिद्ध हुये ।
- सारनाथ में कौंडिन्य एवं अन्य ब्राह्मणों को पहला उपदेश दिया इसे ''धर्मचक्र प्रवर्तन'' कहते है
- सर्वाधिक उपदेश – श्रावस्ती मे दिये ।
- आनन्द प्रिय शिष्य तथा उपालि प्रमुख शिष्य था ।
- आनन्द के कहने पर भगवान बुद्ध ने महिलाओं को संघ मे प्रवेश दिया । प्रजापति गौतमी – पहली 'भिक्षुणी'
- 483 B.C. मे बुद्ध की मृत्यु – खुशीनारा में (कुशीनारा) कुशीनगर
- भगवान बुद्ध के प्रतीक –
  1. हाथी/ सफेद हाथी – भगवान बुद्ध के गर्भस्थ होने का प्रतीक
  2. सांड/कमल – जन्म
  3. घोडा – गृहत्याग का प्रतीक
  4. बोधिवृक्ष/पीपल – ज्ञान का प्रतीक
  5. पदचिन्ह – निर्वाण का प्रतीक
  6. स्तूप – मृत्यु का प्रतीक
  7. सम्बोधि – 35 वर्ष की अवस्था मे गौतम बुद्ध को बोधगया मे निरंजना नदी के तट पर पीपल के वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई ।

ज्ञान/ दर्शन –
4 आर्य सत्य
(i) दुःख है ।
(ii) दुःख का कारण है । (प्रतीत्य समुत्पाद)
(iii) दुःख निवारण है ।
(iv) दुःख निवारण का मार्ग है ।

अष्टांगिक मार्ग –
1. सम्यक् दृष्टि
2. सम्यक संकल्प
3. सम्यक वाक्
4. सम्यक कर्मान्त
5. सम्यक् आजीव
6. सम्यक् व्यायाम
7. सम्यक् स्मृति
8. सम्यक् समाधि

कार्य कारण/ कारणता सिद्धान्त – प्रतीत्य समुत्पाद
(ऐसा होने पर –वैसा होना)

- दुःखो का कारण अविद्या को बताया है ।
- कर्म सिद्धान्त मे विश्वास रखते है ।
- पुनर्जन्म मे विश्वास रखते है ।
- अनात्मवादी होते है । आत्म की अमरता में विश्वास नहीं रखते है ।
- अनीश्वरवादी होते है । ईश्वर के प्रश्न पर बुद्ध मुस्करा देते थे ।
- क्षणिकवाद (अनित्यवादी) – इस जगत की सभी वस्तुऐं अनित्य एवं परिवर्तनशील है ।

- आम्रपाली (वैशाली) भी बौद्ध संघ मे सम्मिलित हो गयी थी

निर्वाण –

- निर्वाण का शाब्दिक अर्थ "दीपक/विज्ञान का बुझ जाना" होता है ।
- भगवान बुद्ध ने निर्वाण की अवस्था का उल्लेख नहीं किया है ।

बौद्ध धर्म की चार संगीति –

समय	स्थान	शासक	अध्यक्ष
1. 483 B. C.	राजगृह	अजातशत्रु	महाकश्यप
2. 383 B. C.	वैशाली	कालाशोक	साबकमीर
3. 251 B. C.	पाटलीपुत्र	अशोक	मोग्गलीपुत तिस्स
4. 1st Cent.	कुण्डलवन (कश्मीर)	कनिष्क	अश्वघोष / वसुमित्र

(1) प्रथम संगीति – दो पुस्तके (ग्रन्थ) लिखी गई

(i) सुत पिटक: – भगवान बुद्ध का जीवन, उपदेश, शिक्षाएँ, तथा बौद्ध धर्म की जानकारी मिलती है। इसके खुद्दक निकाय में बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएँ (जातक) मिलती है । इसकी रचना आनन्द ने की थी ।

(ii) विनय पिटक – संघ के नियम तथा बौद्ध भिक्षुओ के आचार विचार (आचरण) का वर्णन मिलता है इसकी रचना उपाली ने की थी ।

(2) द्वितीय संगीति – बौद्ध धर्म 2 भागों मे विभक्त हो गया ।

- स्थविर तथा महासंघिक – दो भागों मे विभक्त

(3) तृतीय संगीति – इसमे तीसरे पिटक – अभिधम्म पिटक की रचना की गई । इसमे "बौद्ध धर्म के दर्शन" का वर्णन है संयुक्त रूप से सुत – विनय – अभिधम्म पिटक को "त्रिपिटक" कहा जाता है अभिधम्म पिटक की रचना मोगलीपुत तीस्स ने की थी ।

(4) चतुर्थ संगीति – बौद्ध धर्म 2 भागों मे विभक्त हो गया हीनयान (छोटी गाडी) एवं महायान (बडी गाडी)
हीनयान एवं महायान भी कई शाखाओं में विभक्त हो गया ।

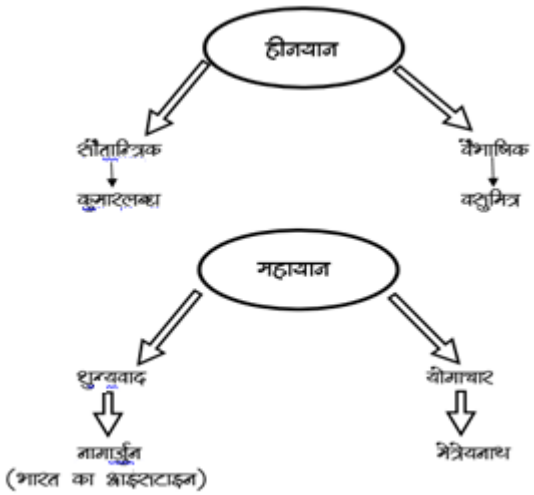

- मत्रय – भावष्य का बुद्ध
- बुद्ध ने पंचशील का सिद्धान्त दिया

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न
बुद्ध, धम्म और संघ

शंकराचार्य को प्रच्छन्न / छदम बुद्ध कहा जाता है ।
बौद्ध संघ में प्रवेश उपसम्पदा कहलाती है ।
गृह त्यागना प्रवज्ञा कहलाता है ।
सुतपिटक को बौद्ध धर्म का एन साइक्लोपिडिया कहा जाता है ।
बौद्ध धर्म का सबसे बडा स्तूप बोरो बदूर स्तूप इण्डोनेशिया में है ।

जैन धर्म

- संस्थापक – ऋषभदेव / आदिनाथ दोनों का वर्णन ऋग्वेद मे
- 21वें तीर्थकर – नेमीनाथ
- 22वें तीर्थकर – अरिष्टनेमी – (कृष्ण के समकालीन)
- 23वें तीर्थकर – पार्श्वनाथ
- महावीर स्वामी (24वें)
  महावीर को निगठनाथपुत कहा जाता है ।
  - जन्म – 540 B. C. भाई – नन्दीबर्मन
  - स्थान – कुण्डग्राम
  - मृत्यु – पावापुरी (बिहार)
  - बचपन का नाम – वर्द्धमान
  - पिता – सिद्धार्थ
  - माता – त्रिशला
  - पत्नी – यशोदा
  - पुत्री – प्रियदर्शना दामाद – जामालि
- 30 वर्ष में गृहत्याग ।

Reasoning

श्रृंखला (Series)

श्रृंखला परीक्षण श्रेणी को ध्यानपूर्वक अध्ययन कर यह ज्ञात करना पडता है कि यह श्रेणी क्रम/नियम का अनुसरण कर रही है या नही कर रही है ।

इस परीक्षण के अन्तर्गत पूछे जाने वाले प्रश्नों को निम्नलिखित वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है ।

(1) अंक श्रृंखला
(2) वर्णमाला श्रृंखला
(3) अंकों/अक्षरों की बारम्बारता श्रृंखला

- श्रृंखला परीक्षण करते समय कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिये ।
  - (a) सबसे पहले पूरी श्रृंखला चलाने का प्रयास करते है ।
  - (b) यदि श्रृंखला न चले तो Break करके चलाते है ।
  - (c) सबसे अन्त में Alternate Series चलाते है ।

(1) <u>अंक श्रृंखला</u> –

इसमें पूछे जाने वाले प्रश्नों में अंकों की श्रृंखला दी जाती है । यह श्रृंखला जोड, घटाव, गुणा, भाग, वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल आदि पर आधारित होती है ।

<u>Type – (I)</u> श्रृंखला में गलत पद ज्ञात करना ।

श्रृंखला क्रम में किसी विशेष स्थान पर आने वाले अंक के स्थान पर कोई गलत अंक संयोजित कर दिया जाता है । इसके लिए सर्वप्रथम यह ज्ञात करना चाहिए कि उस नियम के अनुसार कौन–सा पद परिवर्तित नहीं हो रहा है, वही गलत पद है ।

<u>उदाहरण – 1</u> निम्नलिखित संख्या श्रृंखला में कौन–सी संख्या अनुपयुक्त है ?

76, 98, 126, 160, 200, 248, 298

(A) 248 (B) 200
(C) 160 (D) 298

Ans. (A)

<u>हल</u> – उपरोक्त श्रृंखला का ध्यानपूर्वक अवलोकन करने पर हम पाते है कि श्रृंखला का छठा पद अनुपयुक्त है क्योंकि प्रत्येक पद में जोडें जाने वाली संख्या अपनी पहली संख्या से 6 अंक अधिक है ।

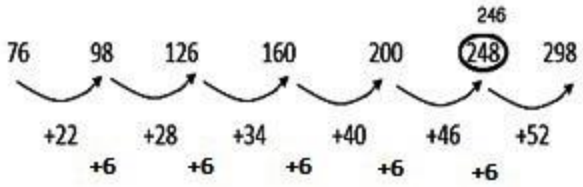

अतः 248 के स्थान पर 246 होगा ।

<u>उदाहरण – 2</u> निम्नलिखित श्रृंखला में कौन–सी संख्या ऐसी है जो कि श्रृंखला में अनुपयुक्त है ?

5, 3, 6, 10, 9, 12, 17, 15, 18, 23

(A) 6 (B) 9
(C) 12 (D) 10

Ans. (D)

<u>हल</u> – उपरोक्त श्रृंखला का ध्यानपूर्वक अवलोकन करने पर हम पाते है कि श्रृंखला –2, +3, +5, –2, +3, +5 ..... के

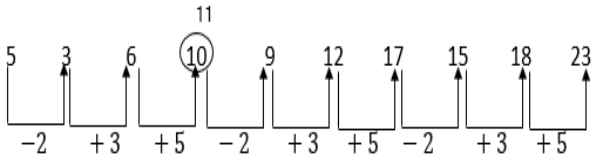

क्रम में घट एवं बढ रही है ।

उपरोक्त श्रृंखला में अंक '6' के बाद 11 आना चाहिए। अतः श्रृंखला में अनुपयुक्त संख्या 10 है ।

<u>निर्देशः (1–7) निम्न श्रेणी में लुप्त संख्या ज्ञात कीजिए ।</u>

1. 56, 42, 30, 20, ? , 6
   (1) 15 (2) 12
   (3) 18 (4) 14

Ans. (2)

<u>व्याख्या–</u>

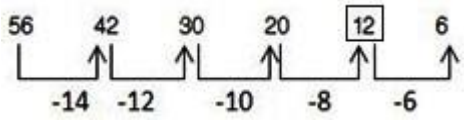

अतः (?) = 12

2. 1, 6, 15, ?, 45, 66, 91

(1) 25 (2) 26

(3) 27 (4) 28

Ans. (4)

व्याख्या–

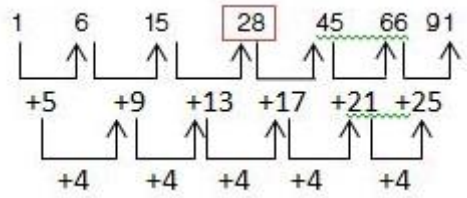

अतः (?) = 28

3. 1, 3, 7, 13, 21, 31, 43, ?

(1) 55 (2) 57

(3) 59 (4) 61

Ans. (2)

व्याख्या–

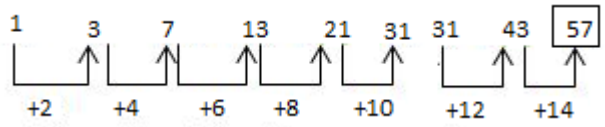

अतः (?) = 57

4. 0.5, 2, 4.5, 8, 12.5, ?

(1) 17 (2) 16

(3) 16.5 (4) 18

Ans. (4)

व्याख्या–

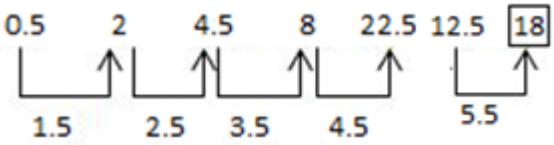

अतः (?) = 18

5. 3, 6, 18, 21, 63, 66, ?

(1) 181 (2) 160

(3) 147 (4) 198

Ans. (4)

व्याख्या– 3 + 3 = 6; 6 × 3 = 18

18 + 3 = 21; 21 × 3 = 63

अतः 63 + 3 = 66

? = 66 × 3 = 198

6. 510, 322, 404, ?

(1) 422 (2) 371

(3) 629 (4) 819

Ans. (1)

व्याख्या– अनुक्रम में सम संख्याएँ है ।

अतः (?) = 422

7. 32, 58, 92, 134, ?

(1) 184 (2) 194

(3) 156 (4) 169

Ans. (1)

व्याख्या–

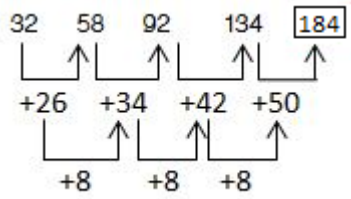

अतः (?) = 184

Type – (II) श्रृंखला को पूरा करना –

इसके अन्तर्गत दिए गए श्रृंखला क्रम में किसी विशेष स्थान को रिक्त छोड दिया जाता है अथवा प्रश्नवाचक चिन्ह (?) द्वारा निरूपित कर दिया जाता है, फिर अभ्यर्थियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वह उस क्रम का पता लगाकर प्रश्नवाचक चिन्ह (?) के स्थान पर आने वाली उपयुक्त संख्या का चयन करें ।

उदाहरण – 1. श्रृंखला में प्रश्नवाचक चिन्ह के स्थान पर दिए गए विकल्पों में से कौन-सी संख्या आएगी ?

16, 23, 31, 40, 50, 61, ?

(A) 81 (B) 83

(C) 77 (D) 73

Ans. (D)

हल – उपरोक्त श्रृंखला का अवलोकन करने पर हम पाते है कि श्रृंखला +7, +8, +9, +10 ..... के क्रम में बढ रही है ।

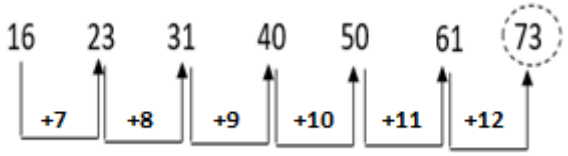

अतः प्रश्नवाचक चिन्ह के स्थान पर आने वाली उपयुक्त संख्या 73 होगी ।

<u>उदाहरण – 2</u> उपरोक्त श्रृंखला में प्रश्नवाचक स्थान पर कौन–सी संख्या आएगी ?

5, 4, 15, 7, 23, 11, 29, 16, 33, ?

(A) 11 (B) 22

(C) 29 (D) 34

Ans. (B)

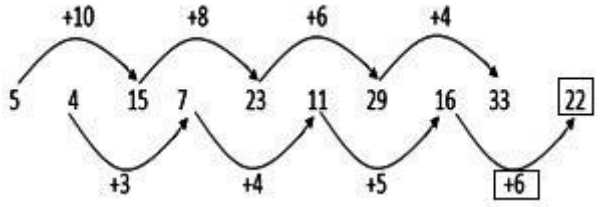

अतः प्रश्नवाचक चिन्ह के स्थान पर आने वाली उपयुक्त संख्या 22 होगी ।

Type – III श्रेणी के नियम पर आधारित

श्रेणी के नियम 2 प्रकार के होते है ।

(1) समान्तर श्रेणी

(2) गुणोत्तर श्रेणी

(1) <u>समान्तर श्रेणी</u> – समान्तर श्रेणी उस श्रेणी को कहते है जिसमें लगातार दो पदों का अन्तर समान होता है ।

- समान्तर श्रेणी के किसी पद में से उसके पूर्व के पद को घटाने पर प्राप्त संख्या 'पदान्तर' कहलाता है ।
- यदि समान्तर श्रेणी का प्रथम पद a हो एवं पदान्तर d हो, तो समान्तर श्रेणी होगी ।

$$a, (a+d), (a+2d) + (a+3d) \ldots\ldots$$

- अतः समान्तर श्रेणी का n वां पद, Tn = a + (n-1) d (जहां, a प्रथम पद एवं d पदान्तर है)

<u>उदाहरण – 1</u> श्रेणी 3, 5, 7, 9..... का 10 वां पद क्या होगा ?

(A) 15 (B) 20

(C) 12 (D) 21

Ans. (D)

हल – 10 वां पद

$$T_n = a + (n-1)\, d$$

$$T_{10} = 3 + (10-1) \times 2$$

$$T_{10} = 3 + 18$$

$$T_{10} = 21$$

अतः 10वां पद = 21

<u>उदाहरण – 2</u> यदि किसी समान्तर श्रेणी का प्रथम पद 5, पदान्तर 3 एवं अन्तिम पद 80 हो, तो पदों की संख्या ज्ञात करें ।

(A) 24 (B) 23

(C) 26 (D) 29

Ans. (C)

हल – $a = 5, d = 3, T_n = 80,\ n = ?$

$$T_n = a + (n-1)d$$

$$80 = 5 + (n-1)\,3$$

$$(n-1) = \frac{80 - 5}{3}$$

$$n - 1 = 25$$

$$n = 25 + 1$$

$$n = 26$$

अतः पदों की संख्या = 26

(2) <u>गुणोत्तर श्रेणी</u> – ऐसी श्रेणी जिसमें दो लगातार पदों का अनुपात समान होता है, 'गुणोत्तर श्रेणी' कहलाती है ।

- इस अनुपात को गुणोत्तर श्रेणी का 'सार्वानुपात' कहते है । गुणोत्तर श्रेणी का 'सार्वानुपात' किसी पद में उसके पूर्व पद से भाग देने पर प्राप्त होता है अर्थात्

$$\frac{t_2}{t_1} = \frac{t_3}{t_2} = \frac{t_4}{t_3} = \cdots\ldots\ldots\ldots\ldots$$

$$= \frac{t_n}{t_{n-1}} = \text{सार्वानुपात}$$

t_1, t_2, t_3, t_4

बीच का पद दोनों पदों का औसत होता है ।

$$t_2 - t_1 = t_3 - t_2 = t_4 - t_3$$

- यदि किसी गुणोत्तर श्रेणी का पहला पद a एवं सार्वानुपात r हो, तो उस गुणोत्तर श्रेणी का n वां पद, $T_n = a.r^{n-1}$

उदाहरण – 3 श्रेणी $3, 9, 27, 81 \ldots\ldots\ldots$ का 6 वां पद कौन सा है ?

(A) 729 (B) 243
(C) 1681 (D) 1747

Ans. (A)

हल – प्रथम पद $a = 3$

सार्वानुपात $d = \frac{9}{3} = 3$

6 वां पद, $T_6 = a.r^{n-1}$

$= 3.3^{6-1}$

$= 3 \times 3^5$

$= 3 \times 243 = 729$

अतः 6वां पद $= 729$

उदाहरण – 4 श्रेणी $7, 14, 28 \ldots\ldots\ldots$ का 10 वां पद कौन–सा होगा ?

(A) 3216 (B) 2736
(C) 2684 (D) 3584

Ans. (D)

हल – प्रथम पद $a = 7$

सार्वानुपात $r = \frac{14}{7} = 2$

10 वां पद $T_{10} = a.r^{n-1}$

$= 7 \times 2^{10-1}$

$= 7 \times 2^9$

$= 7 \times 512$

$= 3584$

अतः 10 वां पद $= 3584$

Type-IV

1. निम्नलिखित प्रश्नों में दिए गए विकल्पों में से विषम संख्या–युग्म को चुनिए।

(1) 10-30 (2) 11-33
(3) 50-150 (4) 13-37

Ans. (4)

व्याख्या– संख्या – युग्म 13–37 को छोडकर अन्य सभी संख्या – युग्मों में दूसरी संख्या, पहली संख्या की तीन गुनी है।

10 × 3 = 30

11 × 3 = 33

50 × 3 = 150

परंतु,

13 × 3-2 = 37

2. निम्नलिखित प्रश्नों में दिए गए विकल्पों में से विषम संख्या–युग्म को चुनिए।

(1) 18 : 37 (2) 24 : 47
(3) 32 : 65 (4) 48 : 97

Ans. (2)

व्याख्या– संख्या – युग्म 24 : 47 को छोडकर अन्य सभी संख्या – युग्मों में दूसरी संख्या, पहली संख्या के दोगुने से एक अधिक है।

18 × 2+1= 37

32 × 2+1 = 65

48 × 2+1= 97

परंतु,

24 × 2-1= 47

(2) वर्णमाला श्रृंखला –

इसके अन्तर्गत दी गई श्रृंखला में अंग्रेजी वर्णमाला से सम्बन्धित अक्षरों की एक श्रृंखला दी जाती है, जिसमें एक या दो अक्षर लुप्त कर दिए जाते हैं, अथवा उस स्थान पर प्रश्नवाचक चिन्ह (?) द्वारा निरूपित किया जाता है ।

उदाहरण – 9 दी गई श्रृंखला में प्रश्नवाचक चिन्ह (?) के स्थान पर क्या आएगा ?

$J \quad K \quad M \quad P \quad T \quad ?$

(A) X (B) W
(C) Y (D) कोई नहीं

Ans. (C)

हल –

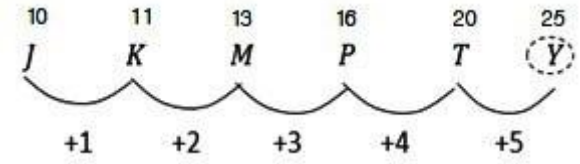

अतः प्रश्नवाचक चिन्ह (?) के स्थान पर आने वाला उपयुक्त अक्षर Y होगा ।

उदाहरण – 10 $L7C, N9F, P12I, R16L, ?$ इस श्रृंखला में प्रश्नवाचक स्थान पर क्या आएगा ?

(A) U21O (B) S21P
(C) S20O (D) $T21O$

Ans. (D)

हल –

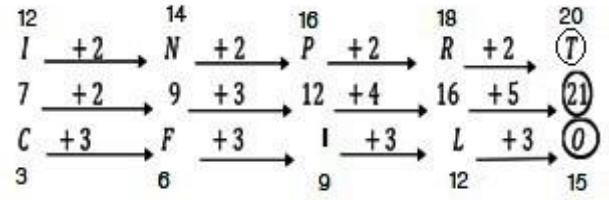

अतः प्रश्नवाचक चिन्ह (?) के स्थान पर उपयुक्त अंक-अक्षर समूह T21O होगा ।

उदाहरण – 11 निम्न श्रृंखला के लुप्त अक्षरों के स्थान पर क्या आएगा ।

$ab__baabc__aabcb___abcb_$

(A) bcaa (B) cbaa
(C) abca (D) $aacb$

Ans. (B)

1. निम्नलिखित प्रश्न में दिए गए विकल्पों में से विषम अक्षरों को चुनिए।

(1) mop (2) prs
(3) tvw (4) xyz

Ans. (4)

व्याख्या–

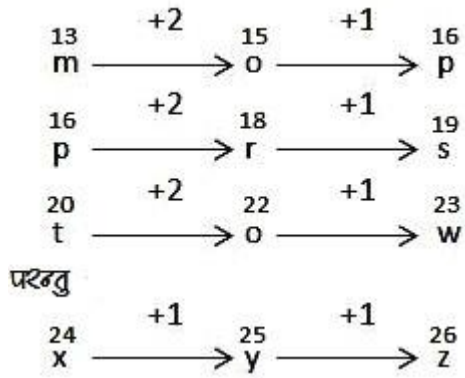

2. निम्नलिखित प्रश्नों में दिए गए विकल्पों में से विषम अक्षरों को चुनिए।

(1) AB (2) EG
(3) IJ (4) OP

Ans. (2)

व्याख्या–

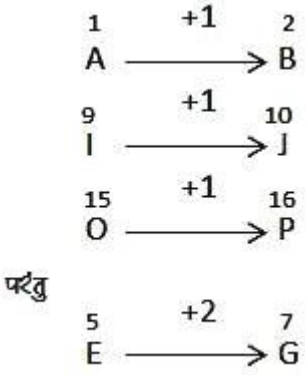

3. निम्नलिखित प्रश्नों में दिए गए विकल्पों में से विषम अक्षरों को चुनिए ।

(1) PM (2) DA
(3) RP (4) OL

Ans. (3)

व्याख्या–

16 -3 13
P ⟶ M
4 -3 1
D ⟶ A
15 -3 12
O ⟶ L

परन्तु

18 -2 16
R ⟶ P

4. निम्नलिखित प्रश्नों में दिए गए विकल्पों में से विषम अक्षरों को चुनिए।

(1) BLOP-OPBL (2) STIR-IRST
(3) CANT-NTCA (4) PEST-SEPT

Ans. (4)

व्याख्या–

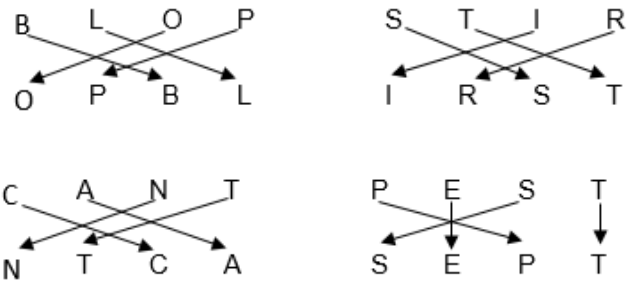

5. निम्नलिखित प्रश्नों में दिए गए विकल्पों में से विषम अक्षरों को चुनिए।

(1) EI-LM (2) AE-RT
(3) IO-WY (4) OU-DF

Ans. (1)

व्याख्या– 'अक्षर–युग्म' 'EI-LM' को छोडकर अन्य सभी अक्षर–युग्मों में दूसरी इकाई के अक्षरों के बीच एक अक्षर का अंतराल है। पहली इकाई में सतत् स्वर है।

AE ⟶ R ⟶(+2) T
IO ⟶ W ⟶(+2) Y
OU ⟶ D ⟶(+2) F

परन्तु

EI ⟶ L ⟶(+1) M

6. निम्नलिखित प्रश्नों में दिए गए विकल्पों में से विषम अक्षरों को चुनिए ।

(1) DEGJ (2) QRTW
(3) YZBE (4) JKNQ

Ans. (4)

व्याख्या–

4 D ⟶(+1) 5 E ⟶(+2) 7 G ⟶(+3) 10 J
17 Q ⟶(+1) 18 R ⟶(+2) 20 T ⟶(+3) 23 W
25 Y ⟶(+1) 26 Z ⟶(+2) 2 B ⟶(+3) 5 E

परन्तु

10 J ⟶(+1) 11 K ⟶(+3) 14 N ⟶(+3) 17 Q

7. निम्नलिखित प्रश्नों में दिए गए विकल्पों में से विषम अक्षरों को चुनिए।

(1) ACDF (2) TUOP
(3) HIVW (4) FGKL

Ans. (1)

व्याख्या–

1 A ⟶(+2) 3 C ; 4 D ⟶(+2) 6 F
20 T ⟶(+1) 21 U ; 15 O ⟶(+1) 16 P
8 H ⟶(+1) 9 I ; 22 V ⟶(+1) 23 W
6 F ⟶(+1) 7 G ; 11 K ⟶(+1) 12 L

(3) अंकों या अक्षरों की बारम्बारता श्रृंखला –

इसके अन्तर्गत अंक या अक्षर एक निश्चित क्रमानुसार बार-बार आते हैं, इस प्रकार अंको/अक्षरों की एक श्रृंखला बनती है जिसमें बीच के या अन्त के एक या दो अंक या अक्षर लुप्त कर दिए जाते हैं और अभ्यर्थियों को लुप्त अंक/अक्षर का पता लगाना होता है ।

उदाहरण – 12

02487503001024875030010
(A) 2,4 (B) 0,1
(C) 0,2 (D) 4,8

Ans. (A)

हल – दिए गए अंकों की श्रृंखला को ध्यान से देखने पर हम पाते हैं कि 02487503001 बार-बार क्रम से आ रहा है ।

अतः अगले दो अंक 2 व 4 होंगें ।

निर्देश : (1–7) निम्न श्रेणी में लुप्त पद ज्ञात कीजिए–

1. Y, S, N, J, G, ?
(1) F (2) E
(3) H (4) I

Ans. (2)

व्याख्या–

25 19 14 10 7 5
$Y \xrightarrow{-6} S \xrightarrow{-5} N \xrightarrow{-4} J \xrightarrow{-3} G \xrightarrow{-2} \boxed{E}$

अतः (?) के स्थान पर आने वाला उपयुक्त पद E होगा ।

2. NZ, OY, PX, QW, RV, ?
(1) FS (2) SU
(3) UF (4) TU

Ans. (2)

व्याख्या–

$N \xrightarrow{+1} O \xrightarrow{+1} P \xrightarrow{+1} Q \xrightarrow{+1} R \xrightarrow{+1} \boxed{S}$
$Z \xrightarrow{-1} Y \xrightarrow{-1} X \xrightarrow{-1} W \xrightarrow{-1} V \xrightarrow{-1} \boxed{U}$

अतः (?) के स्थान पर आने वाला उपयुक्त पद SU होगा ।

3. A, E, I, ?, Q
(1) O (2) M
(3) U (4) L

Ans. (2)

व्याख्या–

$A \xrightarrow{+4} E \xrightarrow{+4} I \xrightarrow{+4} \boxed{M} \xrightarrow{+4} Q$

अतः (?) के स्थान पर आने वाला उपयुक्त पद M होगा ।

4. a d c e b e d f c f e ?
(1) h (2) g
(3) f (4) d

Ans. (2)

व्याख्या–

$a \xrightarrow{+1} b \xrightarrow{+1} c$
$d \xrightarrow{+1} e \xrightarrow{+1} f$
$c \xrightarrow{+1} d \xrightarrow{+1} e$
$e \xrightarrow{+1} f \xrightarrow{+1} \boxed{g}$

अतः (?) के स्थान पर आने वाला उपयुक्त पद g होगा ।

5. AAT, BBE, CCP, ?
(1) DDA (2) DDB
(3) DDC (4) DDD

Ans. (1)

व्याख्या–

$A \xrightarrow{+1} B \xrightarrow{+1} C \xrightarrow{+1} \boxed{D}$
$A \xrightarrow{+1} B \xrightarrow{+1} C \xrightarrow{+1} \boxed{D}$
$T \xrightarrow{-15} E \xrightarrow{-15} P \xrightarrow{-15} \boxed{A}$

अतः (?) के स्थान पर आने वाला उपयुक्त पद DDA होगा ।

6. BC, GH, LM, ?

(1) PQ (2) RS
(3) QR (4) OP

Ans. (3)

व्याख्या–

$$B \xrightarrow{+5} G \xrightarrow{+5} L \xrightarrow{+5} \boxed{Q}$$
$$C \xrightarrow{+5} H \xrightarrow{+5} M \xrightarrow{+5} \boxed{R}$$

अतः (?) के स्थान पर आने वाला उपयुक्त पद QR होगा ।

7. AC, FH, KM, PR, ?

(1) UX (2) TV
(3) UW (4) VW

Ans. (3)

व्याख्या–

$$A \xrightarrow{+5} F \xrightarrow{+5} K \xrightarrow{+5} P \xrightarrow{+5} \boxed{U}$$
$$C \xrightarrow{+5} H \xrightarrow{+5} M \xrightarrow{+5} R \xrightarrow{+5} \boxed{W}$$

अतः (?) के स्थान पर आने वाला उपयुक्त पद UW होगा ।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में दिए गए विकल्पों में से विषम संख्या को चुनिए।

(1) 362 (2) 145
(3) 26 (4) 625

Ans. (4)

व्याख्या– संख्या 625 को छोडकर अन्य सभी संख्याएँ निश्चित प्राकृतिक संख्याओं के पूर्ण वर्ग से एक अधिक है। संख्या 625 एक पूर्ण वर्ग संख्या है ।

$362 = 19 \times 19 + 1$

$145 = 12 \times 12 + 1$

$26 = 5 \times 5 + 1$

परंतु

$625 = 25 \times 25$

उदाहरण हल सहित

(1) 4, 10, 22, 46, ? लुप्त संख्या ज्ञात कीजिए ।

(A) 56 (B) 66
(C) 76 (D) 94

Ans. (D)

हल –

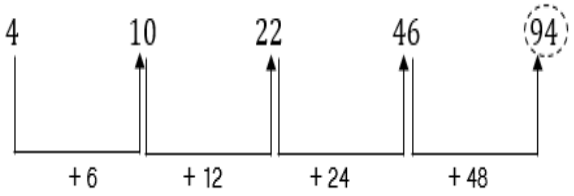

अतः (?) = 94

(2) 87, 90, 84, 88, 81, ?, ?

(A) 86,78 (B) 86,88
(C) 86,88 (D) 85,93

Ans. (A)

हल –

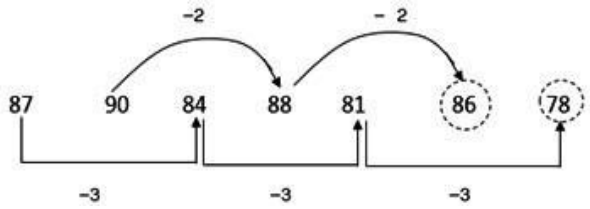

अतः विकल्प (A) 86,78 सही होगा ।

(3) निम्नलिखित में से कौनसी संख्या अनुक्रम में सही नहीं है –

3, 6, 10, 16, 21, 28

(A) 10 (B) 3
(C) 16 (D) 21

Ans. (C)

हल –

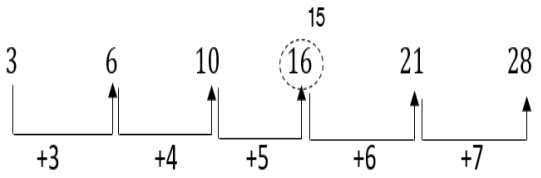

अतः विकल्प (C) 16 सही होगा ।

(4) 2, 12, 36, 80, 150, ? लुप्त संख्या ज्ञात करें ।

(A) 210 (B) 258

(C) 252 (D) 194

Ans. (C)

हल –

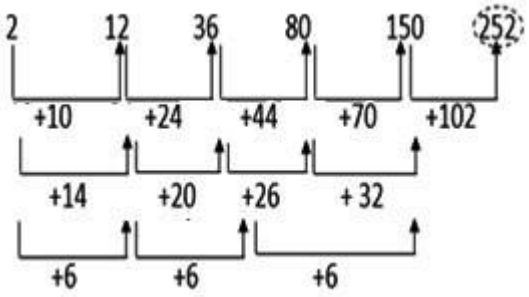

अतः विकल्प (C) 252 सही होगा ।

(5) निम्न में से कौनसी संख्या अनुक्रम में उपयुक्त नहीं है ?

19, 28, 39, 52, 67, 84, 102

(A) 84 (B) 102

(C) 67 (D) 52

Ans. (B)

हल –

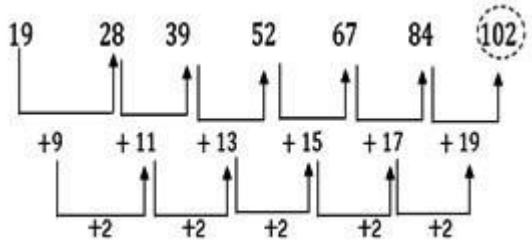

अतः विकल्प (B) 102 गलत संख्या होगी ।

(6) BDFH, IKMO, PRTV, ? लुप्त अक्षर ज्ञात कीजिए

(A) WYAC (B) WXYA

(C) WXYZ (D) WYZA

Ans. (A)

हल –

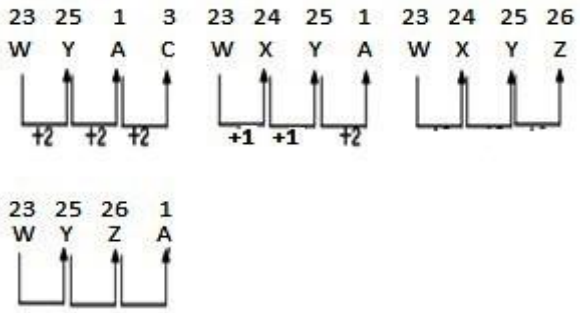

अतः विकल्प (A) ठीक होगा ।

(7) 4E, 8I, 13N, 19T, ? लुप्त पद ज्ञात कीजिए ।

(A) 26U (B) 26A

(C) 26Z (D) 25X

Ans. (B)

हल –

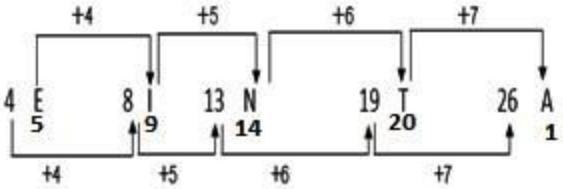

अतः विकल्प (B) सही होगा ।

(8) ab__dbc___ ___cda___d_bcab__d

(A) cdabac (B) cdaabc

(C) adabac (D) dadabc

Ans. (A)

हल – abcd/bcda/cdab/dabc/abcd

अतः विकल्प (A) ठीक होगा ।

(9) 15, 30, 60, 120, ? लुप्त संख्या ज्ञात करें ।

(A) 250 (B) 245

(C) 240 (D) 260

Ans. (C)

हल –

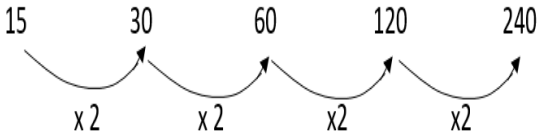

अतः विकल्प (C) सही होगा ।

(10) 120, 60, 30, 15, ? लुप्त संख्या ज्ञात करें ।

(A) 7.5 (B) 5.7

(C) 3.0 (D) 8.5

Ans. (A)

हल –

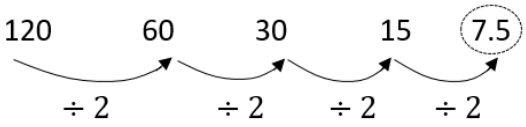

(11) 4, 10, ? 82, 244, 730

(A) 218 (B) 28

(C) 24 (D) 77

Ans. (B)

हल –

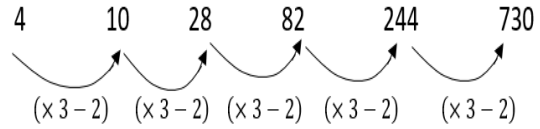

अतः विकल्प (B) सही होगा ।